GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों में नारी समस्या और संघर्ष

राधा शर्मा, डॉ. स्नेहलता निर्मलकर

शोधार्थी पी-एच.डी.
विषय-हिन्दी
डॉ.सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय
करगीरोड़ कोटा, बिलसपुर(छ.ग.)
Mail Id- iodeexam19@gmail.com

सहायक प्राध्यापिका
विभाग-हिन्दी
डॉ.सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय
करगीरोड़ कोटा, बिलसपुर(छ.ग.)
Mail Id- snehlata.irmalkar111@gmail.com

पृष्ठभूमि

मेहरुन्निसा परवेज ने नारी प्रधान लेखिका बनकर नारी समस्या को प्रदर्शन करने के लिए अपने कदम बढ़ाए। साठोत्तर कालीन लेखिकाओं में मेहरुन्निसा परवेज का नाम सर्वोपरि है। उन्होंने सन् 1963 में "पाँचवी कब्र" कहानी प्रकाशित कर साहित्य जगत में अपने कदम रखे और नारी जीवन के उद्धार के लिए अपनी लेखनी चलाई। उन्होंने अपनी कहानियाँ में विषय वस्तु, पारिवारिक दाम्पत्य, सामाजिक, आर्थिक, समस्याओं की मूल संवेदनाओं का समावेश किया है। उनके अभी तक चौदह कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं जिनमें 88 कहानियों का समावेष है। मेहरुन्निसा परवेज के सभी कहानियां मुख्यतः नारी पर आधारित है। हमारे पुरुष प्रधान समाज में नारी को व्यक्तिगत रूप से कोई भी निर्णय लेने का अधिकार नहीं था। नारी को शिक्षा व नौकरी करने की आर्थिक स्वतंत्रता का अधिकार भी नहीं था। हमारे समाज में इसका निर्णय करने का अधिकार केवल पुरूषों को था। पुरूष के इच्छा के बिना नारी अपने घर की दहलीज भी पार नहीं कर सकती थी। पुरूष नारी के बीच की इस दीवार को तोड़कर पुरूष के समान जीवन जीने की प्रेरणा मेहरुन्निसा परवेज की रचनाओं में देखने को मिलती है।

परिचयः-

मेहरुन्निसा परवेज का जन्म 10 दिसंबर 1944 बालाघाट के बहेला गॉव (मध्यप्रदेश) में हुआ था। सदस्य उन्हें प्यार से नदिया के नाम से भी पुकारते थे। इनको नूरजहां के नाम से भी जाना जाता है। इनका जन्म यात्रा के दौरान हुआ था इसीलिए मौलवी ने इनका नाम मेहरुन्निसा परवेज रखा। इनके पिता स्वर्गीय ए.एच.खान मध्य प्रदेश के एक रिटायर्ड डिप्टी कमिश्नर थे। मेहरुन्निसा परवेज की मां का नाम शहजादी बेगम था। पिता के प्रशासनिक अधिकारी होने के कारण मेहरुन्निसा जी को अलग-अलग शहरों में रहने का मौका मिला इनकी प्राथमिक शिक्षा छत्तीसगढ़ के अलग-अलग शहरों में हुई। कक्षा 9वी से उन्होंने बस्तर में नियमित रुप से शिक्षा प्राप्त की थी।

मेहरुन्निसा परवेज के कहानियों में नारी की भूमिका ।

मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में नारी की विभिन्न भूमिकाओं को चित्रित किया गया है। सदियों से समाज में नारी द्वारा समाज को अनेको योगदान दिये गये है जिसमें नारी की अनेकों भूमिकायें रही है। नारी जीवन में मॉ की भूमिका, बहन की भूमिका, बेटी की भूमिका, पत्नी की भूमिका आदि को निर्वाह करती है।

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

मेहरुन्निसा परवेज के कहानियों में नारी के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण ।

नारी के प्रति समाज के अनेकों दृष्टिकोण रहे है किसी के नजर में नारी देवी है तो किसी की नजर में कुल्टा कोई नारी को लक्ष्मी समझता है। तो कोइ उसको कुलक्ष्णी अलग-अलग लोगों का अलग-अलग दृष्टिकोण है।

मेहरुन्निसा परवेज के कहानियों का परिचयात्मक विवेचनः-

(1) **ढ़हता कुतुबमीनारः-**

सपना हमेशा मन में अपने पति और प्रेमी के लिए कल्पना करती थी कि वह पूर्णतः पवित्र होगा और सिर्फ उसी के लिए बना होगा। राहुल मिलिटरी में मेजर थे। वह खुश थी कि उसकी एक मिलिटरी अफसर से शादी हो रही है, पर राहुल को उस जैसी छुई-मुई लड़की नही चाहिए थी। शादी के बाद जब सपना पहली वार राहुल के साथ रहने गई तो पहले ही दिन राहुल ने एक औरत से उसका परिचय कराया और बताया कि वह उसकी दोस्त है पर हर बात पर राहुल का उससे डार्लिग-डार्लिग कह कर संबोधन करना सपना को बुरा लगता था। रात जब वह राहुल का इंतजार करते-करते थक गई तो वह राहुल को देखने ड्राइंगरूम में आई वहॉ उसने राहुल और उसकी महिला दोस्त को नशे में बेसुध पाया। सपना को देखते ही राहुल जोर से हॅसा और कहने लगा पत्नी का कार्य क्या है ? पति के साथ सोना तो पत्नी जी आप बेडरूम में रहिए हमं आते है, अपमानित हुई सपना लैट आई। पर वह रात और उसके बाद की कई रातें भी उसे अकेले ही काटनी पडी। राहुल कभी नहीं लौटा। जब वह उसके पास शरीर से भी रहता था तब भी वह मन से कहीं और ही रहता था। राहुल ने मॉ-बाप की जिद से और छोटी बहन के ब्याह के लिए उसने सपना से ब्याह किया था सपना के घर से मिले दहेज के समान और रूपया से राहुल की छोटी बहन ब्याह दी गई। सपना के सारे अधिकार ,प्यार, ममत्व सब कुछ नीलू के हिस्से में आया और सपना को मिला भव्य सरकारी बंगला, फर्नीचर, कायदा करने वाले वर्दी में नौकर, और दहाडने वाला कुत्ता। जब सपना ने राहुल से नीलू को लेकर बात करी तो राहुल का साफ कहना था, सपना तुम से पहले नीलू मेरी जिन्दगी में आई है, त्याग तो उसने किया है मै अगर पुराने खयालात वाले माता-पिता के सामने ब्याह नहीं कर सकता तो प्यार तो कर ही सकता हूँ मैं पूरी जिन्दगी ऐसे नाटक में नहीं जी सकती हमें अलग होना होगा। राहुल बोला बेसक मेरा दोस्त बकील है तुम बात कर सकती हो , जब सपना ने पूछा कि तुमको मेरी याद नहीं आयेगी तो राहुल बोला हमें ट्रेनिंग में फॉरगेट करना सिखाया जाता है। उसी के साथ दोनों अलग हो जातें है जिसको सपना के घर वाले गलत समझते है और सपना से रिश्ता तोड़ देते है। कितने ही साल बाद अचानक सपना के मायके से उसका छोटा भाई सुमेर उससे मिलने आता है। दरवाजा खोलते ही सुमेर पैर छूता है। सपना सोचती है कि काश जिन्दगी यहीं ठहर जाये। सुमेर कहता है दीदी जिन्दगी की लड़ाई अकेले ही लडनी पडती है। आपको घर में कोई याद नहीं करता, सब आपको भूल गये हैं। सपना ने अपने आपको कुतुबमीनार की तरह खडा कर लिया था पर सुमेर ने जरा सी ईट खीची तो सपना की सोच का कुतुबमीनार ढ़हगया ध्वस्त हो गया।

(2) **सजाः-**

मनुष्य की मानसिक और सामाजिक व्यवस्था ऐसी है कि वह सामने वाले को कभी माफ नहीं करता खुद तो रोज मंदिर और मस्जिद में जाकर रोता, गिडगिडाता है, माफि मॉगता है पर खुद दूसरे को क्षमा करने की क्षमता नहीं रखता। मनुष्य की याद रखने की मनोवृति और वह भी दूसरों की गलतियों को याद रखने की मनोवृति बडी गजब की है। वह सामनेवाले के गुण तो कभी याद नहीं रखता पर उसके अवगुणों का लेखा-जोखा हनुमान चालीसा की तरह याद रखता है। क्षमा करने की योग्यता उसमें नही है, और अगर है भी तो वह इस योग्यता को अपने अन्दर पनपने नहीं देना चाहता। बस इसी स्वभाव के कारण उमा का अपराध कभी क्षमा योग्य नही माना गया। उमा के प्रेम विवाह के बाद उमा को इतना प्यार करने वाले उसके माता-पिता उसको अपराधी समक्षने लगे और उमा को पहले घर से, फिर रिश्ते से फिर दिमाग से, और फिर यादों से निकाल दिया गया था। कोई भूल से भी उमा को याद नही करता था। बाबूजी ने जीते-जी तो कभी उमा को क्षमा नही किया पर जैसे मरकर उमा के लिए जगह खाली कर गये थे। शाम को जब उमा उसके साथ बैठी थी तो अचानक बोली दीदी तुम सोचती हो कि मैं इस घर से चली गई थी पर मैं तो इन्ही किबाडों से लगकर बरसों खडी रही कि शायद कोई द्वार खोल देगा। ठंड, बरसात, और गरमी यानी हर मौसम में मैं यहीं

https://www.gapbhasha.org/

बाहर खुले में खडी रही। उसने चौक कर उमा को देखा और सोचने लगी उमा को दी गई सजा क्या किसी आजन्म कैद से कम थी।

(3) **चमड़े का खोलः-**

यह कहॉनी एक ऐसे परिवार की कहॉनी है जिसमें पिता अपनी बेटी को ससुराल से इसलिए नहीं बुलाता क्योंकि अगर बेटी घर आयेगी तो उसे कपड़े दिलाने पढ़ेगे लड़की की माता इसी सोच में दमे की बीमारी की शिकार हो जाती है, लड़की का पिता उसे छोड कर दूसरी शादी कर लेता है। जब इसका पता बेटी को लगता है तो बेटी अपनी मॉ से मिलने आती है तब लडकी कहती है कि अगर लडकी को अपने पिता के घर से कपडे लाने का रिवाज ही खत्म हो जाये तो कितना अच्छा हो तभी लडकी की मॉ बोलती है कि अगर मॉ की चले तो वह अपने चमड़े का खोल बना कर बेटी को दे दे।

(4) **कोई नहीः-**

सुभद्रा अपने माँ बाबूजी की एक मात्र सहारा है जिसके ऊपर अपने माता पिता की जिम्मेदारी है लेकिन विवेक जो इस कहानी का नायक है सुभद्रा की जिन्दगी में आता है और सुभद्रा को कहता है कि सुभद्रा इक्कीस वर्ष के बाद हर आदमी को अपनी जिन्दगी अपने ढ़ंग से जीने का हक है और एक तुम हों जो अपने माता पिता के लिए अपनी जिन्दगी खराब कर रही हो। विवेक ने यह बोल कर अपना हाथ सुभद्रा के कन्धे पर रख दिया और सुभद्रा को समझाने लगा कि जो माता पिता तुम्हारी जिम्मेदारी नहीं उठा सकते उनकी जिम्मेदारी तुम क्यों उठा रही हो। अपनी जवानी की उम्र इन पर क्यों खराब कर रही हो अभी तुमको अपनाने वाले बहुत है। पर उम्र की सरहद जब पार कर जाओगी तो तुम्हारे पास पछतावा के अलावा कुछ नही रह जायेगा। यह सोचकर सुभद्रा सोचने लगी कि विवेक कितने खुले मिजाज का लड़का है, और उसने एक ही पल में उसे उसकी जिन्दगी की हकीकत बता दी। विवेक ने सुभद्रा से कहा कि दुखों से बाहर निकलो और अपने बारे में सोचो अब तक जिन लोगों ने तुम्हारी आजादी छीन रखी है उससे बाहर निकल कर देखो जिन्दगी कितनी खुबसूरज है। विवेक सुभद्रा को बोलता है कि तुम्हारा बेटी होने का फर्ज जरूर है पर तुम्हारी खुद की भी जिन्दगी है उसमें रंग भरो तब सुभद्रा ने विश्वास से भर कर विवेक को निहारा विवेक की बातों में उसे गहराई व अनुभवों का निचोड नजर आया और सुभद्रा को विवेक से आत्मविश्वास मिला नयी उमंग जीवन में भरने की किरण जगी थी। सुभद्रा ने विवेक की बातों में आकर अपने बूढे पिता से विद्रोह कर विवेक से विवाह कर लिया। विवेक ने सुभद्रा को अपने पिछले जीवन के बारे में बताया था कि उसका बचपन में विवाह हो गया था पर उस विवाह, उस रिश्ते का उसके जीवन में कोई अर्थ नहीं है। सुभद्रा और विवेक के विवाह के बाद अचानक सुभद्रा ने मेहसूस किया कि विवाह के पहले और विवाह के बाद वाला विवेक विल्कुल अलग है। सुभद्रा ने ससुराल पहुच कर पहली वार पति के बदले हुए रूप को निहारा तब उसको झटका लगा कि विवेक ने उसको धोका दिया है। सुभद्रा ने देखा कि वह विवेक के लिए एक रिक्त स्थान की पूर्ति मात्र है इसके अलावा और कुछ नही। जब सुभद्रा ससुराल पहुंची तो विवेक सुभद्रा के साथ हो कर भी साथ नही होता था। विवेक सुभद्रा के साथ अपने परिवार से अलग रहता था, विवेक की पहली पत्नी विवेक के परिवार के साथ रहती थी। विवेक सुभद्रा को ज्यादा मान नही देता था, सुभद्रा को अब पता चल गया था कि उसकी जिन्दगी को विवेक द्वारा खूबशूरती से ठगा जा चुका है। वह फड फडाती चिड़िया से अधिक कुछ नही है जिसने उडना सिखाया उसी ने बाहर निकलते ही उसके पंख काट दिये। सुभद्रा रोना चाहती थी पर उसकी ऑखों का समुद्र अब सूख चुका था, वह अपने आपको चलती फिरती लाश महसूस करने लगी थी। सुभद्रा समझ चुकी थी कि यहॉ उसका कोई नही है।

(5) **नंगी ऑखों वाला रेगिस्तानः-**

नीरा देव की पत्नी थी जो देव की उम्र से आधी उम्र की है। नीरा को अपने अधेड पति से पिता जैसा प्यार तो मिला पर पति का वह पौरूष नही मिला जिसके लिए उसकी उम्र भूखी थी। देव रात को थका हारा आ कर छोटे बच्चे के जैसा गहरी नींद में सो जाता था। पर नीरा अपनी यौवन की आग में सुलगती रहती थी। देव की उत्तेजना भरी उम्र अब जा चुकी थी। जिस साल शादी हुई थी उसी साल उसको एक बेटी हुई और उसके बाद देव का पौरूष खत्म हो गया था। नीरा को अपना जीवन पिंजरे में बंद तोता-मैना के जैसा लगने लगा था। जिसको दोनों समय खाना और कभी-कभी मालिक की पुचकार मिल जाती है। एक एक्सीडेंट में देव अपाहिज हो जाता है। जिसके गम में देव अपने आपको शराब में डुवा लेता है। और पढ़ा लिखा देव शराब के नशे में नीरा को गन्दी-गन्दी गाली भी बकने लगा था। जिससे परेशान हो कर नीरा देव से तलाक ले लेती है। तलाक के बाद नीरा अमित से मिलती है जो तीन बच्चों का पिता है और जिसकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी है। नीरा के यौवन की मुरझाई हुई बेल अमित के

https://www.gapbhasha.org/

पौरूष का सहारा पाकर फिर से बढने लगी। नीरा ने अपने भविष्य को अमित को सौप दिया था। नीरा की बेटी अब नौ वर्ष की हो गई थी। देव कभी -कभी बेटी से मिलने आता था। अब वह हारा हुआ बादशाह के जैसा लगने लगा था। अमित अब अपने घर रहने लगा था दूसरे शहर में जहॉ उसके बच्चे और काका रहते थे। नीरा के पास उसका पत्र आता था और नीरा भी उसको पत्र का जबाब भेजती थी पर बहुत दिनों तक अमित नीरा से मिलने नही आया तो गुस्से में नीरा ने उसके पत्र का जवाब देना बंद कर दिया। अमित का नीरा को अंतिम पत्र आया कि नीरा नाराजगी छोड कर घर आजाओ मेरी बेटी की शादी है और अब घर सम्हालने वाला कोई नहीं है। नीरा अमित के घर चली आई जब वह अमित के घर पहुची तो उसको लगा जैसे वह उस बॅगले की मालकिन है जब बच्चों ने उसका स्वागत किया तो नीरा का अभिमान से मन भर गया। नीरा अमित से बोली कि शादी की तैयारी हो गई अमित कुछ बची है कुछ समान लाना बकाया है शाम को साथ चल कर ले आएंगे। जब अमित और नीरा बाजार समान लाने गये तो अमित दुकान पर बोलता है मेमसाव को दिखाओ यह सुन नीरा की खुशी का ठिकाना नही रहता। नीरा अमित के साथ शादी का सपना देखती है। क्योकि अमित नीरा से वादा करता है कि बेटी की शादी के बाद अमित नीरा से शादी करेगा। बेटी की शादी के बाद अमित नीरा के पास आता है और कहता है कि नीरा मुझे अजीव सा लग रहा है। आज मुझे पहली बार लग रहा है कि में बाप हूॅ और अब ससुर बन गया हूॅ मेरी हरकत का असर अब मेरी बेटी के जीवन पर पडेगा। अमित नीरा को बोलता है कि क्या हमं दोनो जिन्दगीं भर मित्र बनकर नहीं रह सकते है। नीरा को लगा जैसे यहीं कहानी खत्म हो गई जैसे वह अपनी बेटी को बहलाने के लिए कहानी सुनाती थी कि एक था राजा एक थी रानी दोनों मर गये खत्म कहानी। इतना सब देख कर समझ कर भी उसकी ऑखों में आशु नहीं आ रहे थे जैसे ऑखें रेगिस्तान सी सूख गई थी।

निष्कर्षः-

मेहरुन्निसा परवेज के साहित्य को पढ़कर यह समझ आता है कि उन्होंने अपने साहित्य द्वारा समाज को क्या योगदान दिया है। उन्होंने अपने साहित्य द्वारा नारी को परिवार में आधुनिक बनाने की कोशिश की है, अपने अधिकारों के प्रति सचेत व सजग किया है, उन्होंने अपनी कहानियों द्वारा परिवार में पुरूष के दबाव से नारी को अपनी ओर से जाग्रित करने की कोशिश की है। उन्होने नारी को परिवार और समाज में अपनी सक्रिय भूमिका के प्रति जागरूक किया है। पत्नी को पति के सामने अपने अधिकारों की मॉग करना समझाया है। नारी की नारी से पहचान करवाई है कि वह पति की दासी नही वह उसकी ग्रहस्वामिनी है। मेहरुन्निसा परवेज का मानना है कि जीवन जीने का एक वार अवसर मिलता है फिर इसे बेवसी से क्यों जिया जाये इसको अपने तरीके से क्यों नही जीया जाये। मेहरुन्निसा परवेज कहतीं है कि जीवन को खुशी से जीना चाहिए और अपने परिवार के साथ-साथ अपने लिए भी जीना चाहिए। मेहरुन्निसा परवेज में अन्याय के प्रति विद्रोह करने वाली नारियों का चित्रण सहज और प्रभावी रूप से किया गया है। नारियों को वासना पूर्ति शोषण पर अपनी तूलिका द्वारा समाज में बदलाव लाने का प्रयास। नारी किस प्रकार की समस्याएं समाज में झेल रही है, पुरूषो के शोषण का शिकार वन रही है। स्वावलंवी नारी के जीवन संघर्ष अथवा नारी जीवन की विविध छवियों को अनुभवगत यथार्थ के धरातल पर विशिष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भ सूची

[1] मित्तल सुशील -आधुनिक हिंदी कहानी में नारी की भूमिका।
[2] चन्द्रा डॉ. मुदिता, डॉ. टोप्पो सुलक्षणा - आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में नारी का बदलता स्वरूप।
[3] श्रीवास्तव डॉ. जगदीश सहाय-समाज दर्शन की भूमिका।
[4] परवेज मेहरुन्निसा-मेहरुन्निसा परवेज की लोकप्रिय कहॉनियॉ।
[5] कोई नहीं (धर्मयुग - 5 दिसंबर 1982)
[6] परवेज मेहरुन्निसा-मेहरुन्निसा लाल गुलाब प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली में सन् 2006
[7] परवेज मेहरुन्निसा का लेख- पुनश्च पत्रिका विशेषांक
[8] परवेज मेहरुन्निसा-मेहरुन्निसा परवेज आदम और हव्वा नैशनल पब्लिशिंग हाऊस में सन्1972।
[9] पाण्डेय पद्माकर (2006)- नागरी पत्रिका।

https://www.gapbhasha.org/

[10]ममता-आकाशदीप पत्रिका।

[11]विक्रम कुमार को दिये गये साक्षात्कारक के अनुसार (ऋतचक्र - जून 1989)

[12]हिन्दी विश्व कोश-खंड-2

[13]परवेज मेहरुन्निसा-मेहरुन्निसा परवेज ढ़हता कुतुब मीनार सत्साहित्य प्रकाशन में सन् 1993।

[14]परवेज मेहरुन्निसा-मेहरुन्निसा टहनियों पर धूप वाणी प्रकाशन नई दिल्ली में सन् 1977

https://www.gapbhasha.org/